परम रक्षक से बंधवायें रक्षासूत्र

राखी का त्योहार जब आने वाला होता है, तो हम सभी इस त्योहार के प्रति, इस पवित्र बंधन के प्रति बहुत निर्मल भाव से इंतज़ार कर रहे होते हैं। इस त्योहार की महिमा इतनी क्यों है, क्या यह सिर्फ भाई बहन के बीच पवित्र रिश्ते को उजागर करता है, या इसका गुह्य बात से कोई जुड़ाव है? तो हम उस गुह्य रहस्य की ओर बढ़ते हैं और समझते हैं रक्षासूत्र का रहस्य....

हरेक बहन अपने भाई को रक्षाबंधन के दिन रक्षासूत्र बांधती है और कहती है कि हर मुसीबत की घड़ी में उसका भाई उसकी रक्षा करे, ऐसी अपेक्षा रखती है। लेकिन अगर हम इस पूरे दृश्य को अपने सामने लायें तो कई बार देखने में आता है कि बहन जिस भाई को रक्षासूत्र बांधती है वो उसकी उम्र से छोटा होता है। अगर इसको वैज्ञानिक रूप से देखा जाये तो छोटा भाई अपनी बड़ी बहन की रक्षा कैसे करेगा? अगर वो छोटी आयु का है, दुर्बल है, गरीब है, या दूर है, तो वो धन से, तन से अपने बहन की रक्षा करने में असक्षम है, असमर्थ है, है या नहीं! क्या आज के इस दौर में कोई भी पूरी तरह से अपने भाई को लेकर सुरक्षित है, या सुरक्षित महसूस करता है? हमारे हिसाब से तो नहीं। तो ऐसा क्या किया जाए कि हर कोई अपने आप को सुरक्षित महसूस करे और हर समय उसे ये गैरंटी भी मिले कि उसका रक्षक उसके पास पहुँच ही जायेगा।

इस दुनिया में अगर कभी किसी के ऊपर मुसीबत आती है तो वो सिर्फ एक ही सहारा ढूंढ़ता है, जिसको हम भगवान कहते हैं, उसकी निगाह उसकी तरफ ही जाती है। वो उसे ही अपना सबकुछ मानकर उसी के ऊपर सबकुछ छोड़कर अपना कार्य करता है। लेकिन परमात्मा भी कई सारे शर्तों में बंधा हुआ है, वो बिना शर्त किसी को कुछ भी नहीं देता है। आप भी शायद अपने सम्बंधियों से यही अपेक्षा रखते हैं कि अगर वो ठीक हैं, सही मार्ग पर हैं, हमेशा चाल-चलन व्यवहार सब ठीक है तो वे सबकुछ करने को तैयार हैं। ऐसे ही परमात्मा उनकी रक्षा करने के लिए हमेशा बाध्य है, जो पवित्रता के

आधार से अपने जीवन को संवारते हैं। रक्षाबंधन विशेष रूप से पवित्रता का बंधन है। पवित्रता अर्थात् श्रेष्ठ कर्म, सुखदायी कर्म आदि से सबके जीवन को महका देना, या सुखदायी बना देना और उन कर्मों से दुआयें कमाना। तो सबसे पहले अपने आपको हमें चेक करना है, कि हम कितने पवित्र हैं, कितने श्रेष्ठ कर्म कर रहे हैं, कितना सबको सुख दे रहे हैं, नि:स्वार्थ भाव से सेवा कर रहे हैं, उसके आधार से वो परमरक्षक आपको सबकुछ देने के लिए बाध्य हो जाये।

रक्षाबंधन के पावन पर्व पर हम उस परमरक्षक के हाथों से अगर सच में रक्षासूत्र बंधवाना चाहते हैं, तो हमें सर्वप्रथम पवित्रता को अपने जीवन में अपनाना होगा। पवित्रता अर्थात् सच्चाई सफाई ईमानदारी से अपने को सम्पूर्ण रीति से समर्पित करना परमात्मा के प्रति। एक बार पवित्र बनने की प्रतिज्ञा लेने के बाद उसे भूल से भी न तोड़ना, उसका सम्पूर्ण विश्वास पात्र बनना, जिससे वो आपकी तरफ स्वयं ही आकर्षित हो जाये। दरअसल ये बात किसी पुरुष या स्त्री के लिए नहीं है, भाई या बहन के लिए नहीं है, ये बात सर्व आत्माओं के लिए है। सर्व आत्माओं हेतु है। रक्षा करने के लिए बाध्य करना बहुत सहज है, लेकिन पवित्रता को धारण करना आज लोगों को मुश्किल लगता है। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में परमात्मा का सानिध्य लेने हेतु बहुत सहज विधि सिखाई जाती है। जिसको हम सहज राजयोग कहते हैं। इस राजयोग के माध्यम से हम अपनी पवित्रता को कायम रख सकते हैं। निरंतर जागृत अवस्था में हमें ये राजयोग रखता है। बीच बीच में जब हम कभी भूल जाते हैं, तो परमात्मा द्वारा पुन: पुन: ज्ञान वर्सा से फिर से चैतन्य अवस्था को प्राप्त कर जाते हैं। वो अपने सुंदर और शक्तिशाली महावाक्यों से हमें याद दिलाता है कि आपने हमसे पवित्रता की प्रतिज्ञा की थी, आप भूल तो नहीं गये। ऐसी बातें अगर भगवान आपसे करे तो कैसा लगता है! इसलिए उस पवित्रता को याद दिलाने के कारण ही हम सभी ब्रह्मावत्स आज इतने वर्षों से उस परम रक्षक का रक्षा कवच पहनकर तीव्र गति से आगे बढ़ रहे हैं, और पूरे विश्व को उस परम रक्षक से जुड़वाने की भी कोशिश कर रहे हैं। क्या आप हमारे साथ इसमें सहयोगी बनने के लिए सज्ज नहीं हैं? क्या आप हमारे साथ कदम से कदम मिलाकर रक्षा दिवस को सार्थक करने के लिए, परमात्मा से रक्षासूत्र बंधवाकर अपने जीवन को पूर्णतया सुरक्षित करने में सहयोग नहीं देंगे क्या? तो आइये, एक पवित्र बंधन बांधने के लिए हम सभी एक साथ एकजुट होकर इस अभियान में अपनी अंगुली दें।

'गणेश' और हमारा...- पेज 2 का शेष

तर्क को कुतर-कुतर करने के लिए स्वच्छन्द नहीं छोड़ देते। उनका वाहन चूहा विवेक की अविवेक पर विजय का सूचक है।

चूहा चुपके से ही बिल बनाते-बनाते घर में आ जाता है और छिपकर अथवा अन्धेरे में कुतरने का काम करता रहता है। ऐसे ही संशय अथवा अविवेक भी अज्ञान अंधकार में आकर बिल में छिपने की तरह अप्रत्यक्ष रूप में अपना काम करना शुरू कर देता है और मनुष्य के ज्ञान की जड़ें खोखली कर देता है। मनुष्य को चाहिए कि संशय की प्रवृत्ति पर काबू पाये।

बुद्धि और सिद्धि अथवा विधि और सिद्धि

गणेश जी के दोनों ओर बुद्धि और सिद्धि नामक उनकी दो पत्नियाँ दिखाई जाती हैं। ये भी क्रमश: ज्ञान और उस द्वारा होने वाली सफलता की प्रतीक हैं। जो बुद्धिवान होगा अर्थात् सोच-समझकर कार्य करेगा, दूरदर्शिता का प्रयोग करेगा, उसको सिद्धि अथवा सफलता तो होगी ही। सफलता तो ज्ञानवान व्यक्ति का जन्म सिद्ध अधिकार है।

कई बार गणेश जी के चित्रों में उनके साथ केला फल भी चित्रित किया जाता है, साथ ही लक्ष्मी को भी। केले के पौधे की यह विशेषता है कि उसके ऊपर के पत्ते को हटायें तो उसके नीचे और पत्ता निकल आता है। यदि उसको हटायें तो उसके नीचे एक और पत्ता सामने आ जाता है। अपनी इस विशेषता के कारण केला इस बात का सूचक है कि ज्ञानवान व्यक्ति की बातों में गहराई होती है। उसकी गहराई में जायें तो इसमें एक और बात छिपी होती है। इस बात को देखकर किसी कवि ने कहा है- जैसे केले के पात-पात में पात। तैसे ज्ञानी की बात-बात में बात। अत: गणपति के साथ केला को चित्रित करने के पीछे ये भाव होता है कि ज्ञानवान व्यक्ति की बातों में बहुत गहाराई होती है।

'लक्ष्मी' शब्द 'लक्ष्य' शब्द से बना है। लक्ष्मी को सदा कमल पर बैठे या खड़े दिखाया जाता है। यहाँ तक कि उसके नामों में से एक नाम कमला भी है। लक्ष्मी वैकुण्ठ के राज्य - भाग्य की परिचायिका है। वो पवित्रता, सुख और शान्ति का मूर्त रूप है, क्योंकि ज्ञानवान व्यक्ति के जीवन का लक्ष्य भी सम्पूर्ण पवित्रता व शान्ति के जीवन की प्राप्ति करना अथवा कमल पुष्प समान बनना अर्थात् स्वर्ग का सुखकारी स्वराज्य प्राप्त करना होता है। इसलिए गणपति के साथ लक्ष्मी को दिखाना स्वाभाविक है। ऐसे तो गणपति का आध्यात्मिक रहस्य और भी है, लेकिन इन सबको यहाँ स्पष्ट करना सम्भव नहीं है।

मुम्बई। न्यू यॉर्क के युनाइटेड नेशन्स हेडक्वार्टर्स में यू.एन. द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ की अति.मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी को उनके राष्ट्र के प्रति उत्कृष्ट सेवाओं तथा आउटस्टैंडिंग इंडिविज्युअल एचीवमेंट्स के लिए 'भारत गौरव अवॉर्ड' से नवाज़ा गया। दादी की अस्वस्थता के कारण ब्र.कु. भूमिका ने यह अवॉर्ड प्राप्त किया तथा मुम्बई में यह अवॉर्ड दादी को प्रदान किया गया।

भीलवाड़ा-राज.। मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष जस्टिस प्रकाश टाटिया को ब्रह्माकुमारीज़ मुख्यालय माउंट आबू में होने वाले ज्युरिस्ट कॉन्फ्रेन्स का निमंत्रण देते हुए ब्र.कु. इन्द्रा। साथ हैं ब्र.कु. बालमुकुन्द तथा ब्र.कु. अमोलक।

कोलकाता। टीटागढ़ ईद मिलन कमेटी द्वारा आयोजित ईद मिलन कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. कमला। मंचासीन हैं विधायक मधुसूदन घोष, बौद्धी वेन रतन ज्योति महस्तवीर, फादर अरविंद मण्डल, श्री स्वामी नत्य रूपा नंद महाराज, मौलाना शाहिद हुसैन मिसबाही, सरदार गुरूमुख सिंह गांधी व रबिंदर सिंह, किशोर जैन तथा संत निराकारी आनंद प्रकाश त्रिपाठी बाबा।

सादाबाद-उ.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा श्री कृष्णा गार्डन में आयोजित 'विशाल किसान महासम्मेलन' के दौरान दीप प्रज्वलित करते हुए जिला कृषि अधिकारी विपिन कुमार, पूर्व कृषि अधिकारी ब्र.कु. प्रहलाद, ब्र.कु. सुमंत, ब्र.कु. सीता, ब्र.कु. भावना, ब्र.कु. बबिता,राज. तथा अन्य।

जालोर-राज.। ब्र.कु. मिन्नती, ब्र.कु. पावनी तथा ब्र.कु. सुनीता के दिव्य समर्पण समारोह के अवसर पर उनके साथ उपस्थित हैं राजयोगिनी ब्र.कु. शीलू,माउण्ट आबू, राजयोगी ब्र.कु. भूपाल,माउण्ट आबू, रघुनाथ जी भारती, ब्र.कु. अरुणा तथा अन्य।

मुंगेर-बिहार। गुरू पूर्णिमा के दिन कार्यक्रम के दौरान भोग लगाते हुए मध्य में ब्र.कु. मनीषा। साथ हैं ब्र.कु. रेणु तथा ब्र.कु. नम्रता।